कहीं जीवन की दौड़ में पीछे न रह जाएं हम-अबरोल
विज्ञान और अध्यात्म को जोड़े साथ-दादी जानकी

आबू रोड, 3 जनवरी, निसं। हम विज्ञान के दौड़ में दुनिया में तेजी से विकास कर रहे हैं। इसी तरह का विकास रहा तो आने वाले समय में जल्दी ही विकसित देशों की श्रेणी में खड़े होंगे। लेकिन जीवन के दौड़ में हम पीछे होते जा रहे है। जीवन तो है परन्तु मूल्यों के बिना अधूरा होता जा रहा है कही इस मामले में हम पीछे ना छूट जायें। उक्त उदगार राष्ट्रीय उर्वरक निगम लिमिटेड दिल्ली की मु य प्रबन्ध निदेशक नीरू अबरोल ने व्यक्त किये। वे ब्रह्माकुमारीज संस्था के शांतिवन में वैज्ञानिक एवं अभियन्ताओं के स मेलन में बोल रही थी।

उन्होंने कहा कि चाहे महिला हो या पुरूष विज्ञान की तकनीकी का प्रयोग करे परन्तु मूल्यों के साथ समझौता ना करें। ब्रह्माकुमारीज संस्थान ने जिस तरह से विज्ञान के उपयोग के साथ आध्यात्मिकता को बनाये रखा है इस विधि से जल्दी ही नयी दुनिया बन जायेगी। आज दुनिया की एकमात्र संस्था है जिसका संचालन महिलाओं के हाथों में हैं। यह किसी अजूबे से कम नहीं है।

ब्रह्माकुमारीज संस्था की मु य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि व्यक्ति अपनी आत्मा के स्वधर्म को भूलने के कारण ही दु:खी व अशांत हो गया है। शांति, प्रेम व सुख तो परमात्मा की याद से ही आते हैं। यदि देश व समाज का सर्वांगिण विकास चाहिए तो उसके लिए जरूरी है कि अध्यात्म और विज्ञान दोनो सामंजस्य बनाये रखा जाये।

कबीर पीस मिशन के संस्थापक तथा पूर्व आईएएस लखनऊ के राकेश मित्तल ने कहा कि जब हम अपने व्यवसाय में थे तब से संस्था के स पर्क में है। हमने अपने निजी जीवन से देखा है कि जीवन में तरक्की और शांति के विकास के लिए ब्रह्माकुमारीज संस्थान का कोई जबाब नहीं है। इससे जहॉ शांति और विकास के लिए काम करना सीख जाते है वहीं दूसरों के साथ व्यवहार करने की कला आ जाती है।

संस्था की अतिरिक्त मु य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि यदि हम परमात्मा को पिता के रूप में देखते हैं तो वह दाता भी है और सर्व संबंधों को निभाने वाला भी है। परमात्मा हम सभी आत्माओं का पिता है। इसलिए हमें सदा एक-दुसरे के कल्याण के लिए ही सोचना चाहिए। सतना के विधायक शंकर लाल तिवारी ने कहा कि विज्ञान ने हमें उचाईयां दी है इसमें कोई शक नहीं परन्तु हमारे अन्दर संस्कारों का गिरना चिंताजनक है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की बहनें इसके लिए जो सीखा रही है वह सराहनीय है।

संस्था के महासचिव बीके निर्वैर, विज्ञान एवं अभियन्ता प्रभाग की अध्यक्षा बीके सरला, प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके मोहन सिंघल ने कहा कि भौतिक साधनों की चकाचौंध ने मानव जीवन को उलझा दिया है जिसके कारण उसे जीवन की पुन: खोज की आवश्यकता महसूस हुई। मैं कौन हूं यह जान लेने के पश्चात आत्मा खुद को हल्का महसूस करने लगती है।

इस कार्यक्रम को वैज्ञानिक एवं अभियंता प्रभाग के मु यालय संयोजक बीके भरत, महाराष्ट्र की राजयोग शिक्षिका बीके गोदावरी, वायुसेना के सेवानिवृत जवाहर मेहता, पानीपत के भारत भूषण सहित कई लोगों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये तथा अपनी नववर्ष की शुभकामनायें दी।

तीन दिन तक चलेगा स मेलन: जीवन की पुन:खोज पर आयेाजित स मेलन तीन दिन तक चलेगा। इसमें विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय पर चर्चा होगी। इसमें भारत नेपाल से चार हजार लोग भाग ले रहे हैं।

3एबीआरओपी, 1, 2, 3, 4 कार्यक्रम का दीप जलाकर उदघाटन करते अतिथि, सभा में कार्यक्रम को स बोधित करते मेहमान तथा उपस्थित लोग।